International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-10-2022, Accepted: 29-10-2022, Published: 16-11-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 6-7

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में कृषक जीवन

कुमारी आरती
हिंदी विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय सन्दर्भ में कृषक जीवन एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। कृषि को केवल एक कर्म न मानकर 'संस्कार' मानने के पीछे मुख्य कारण यह है कि कृषि ने मनुष्य को दुरुहता उससे संघर्ष, प्राकृतिक विन्यास उसके उचित उपयोग और दोहन से अवगत कराया। कृषि ने मनुष्य को प्रकृति से उसके वास्तविक अर्थों में परिचित कराया। मनुष्य में प्रकृति के प्रति तरलता और ममत्व का भाव उत्पन्न हुआ। 1990 के बाद कृषि नीतियों से उदारवादी आर्थिक सुधारों का कार्यक्रम भारत में शुरू हुआ, प्रतिव्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता कम होने लगी थी वह लगातार कम होती गई। 2002 और 2003 में हालात ये हो गये कि खाद्यान्न उपलब्धता दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान पड़े बंगाल के भयंकर अकाल के वर्षों से भी कम हो गई।

मूल शब्दः कृषक जीवन, संस्कार, उदारवादी, खाद्यान्न

प्रस्तावना
1990 के आसपास से ही बाजारवादी शक्तियों को खुली छूट मिलने लगी। इन शक्तियों का एक मात्र उद्देश्य था लाभ कमाना उपन्यासों में बार–बार इस बात को स्थापित किया गया। सरकार ने किसानों को जमीन पर लोन देना शुरू किया परन्तु विचौलियों और अफसरों की भ्रष्टता को न रोक सकी। विचौलिये बैंक के अफसरों के साथ मिलकर किसान के जाली कागज और हस्ताक्षर के माध्यम से किसानों की जमीन पर लोन ले लेते हैं। भरने की बारी आती तो भाग खड़े होते और नोटिस किसान को जाता, उसके बाद किसान इस नोटिस को लेकर आला–अफसरों के पीछे–पीछे घूमता कि उसने तो लोन लिया नहीं, उसकी समस्या सुनना तो दूर उससे मिलते तक नहीं।

जब शुरू में कपास आया तब कुछ साल तक अच्छी खेती हुई बहुत से सम्पन्न किसानों की टैक्टर के साथ फोटो नजर आने लगी वहीं कुछ सालों में टैक्टर और किसान अखबारों से गायब होने लगे क्योंकि खेती बंजर हो गई। उसमें से लागत तक नहीं निकलती जिस किसान ने फसल के भरोसे कर्जा लिया था, उसके पास उसे चुकाने का रास्ता न रहा।

'हलफनामे' (2006) राजू शर्मा के चर्चित उपन्यास में किसान आत्महत्या के साथ जल की समस्या को भी उठाया है। उपन्यास अपने समकालीन यथार्थ के कथावस्तु के रूप में चयन के चलते कई मायनों में विशिष्ट हो जाता है क्योंकि विषय वस्तु के लिहाज से इस उपन्यास की भाषा वैसी ही संजीदा और चिंताग्रस्त है जैसा कि स्वयं यह विषय उपन्यास को पढ़ते हुए हमारे मन में वैसा ही भय उत्पन्न होता है जैसा कि हलफनामा दाखिल करने के बाद पूरी प्रक्रिया मकई या कि अन्य स्तरों पर उसकी पत्नी, माँ व बच्चों के भीतर उत्पन्न होता है। यह भय बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक चिंता का रूप है।

'आखिरी छलांग' (2008) शिवमूर्ति वर्तमान ग्रामीण स्वरूप के बदलते हुए यथार्थ को उपन्यास में चित्रित किया है वह किसानों, मजदूरों, दलितों, स्त्रियों के संघर्षरत जीवन को कथानक बनाने वाले सभी कथाकारों से भिन्न भी है। उपन्यासकार इस उपन्यास की कथा पहलवान के जीवन से आरम्भ करता है जिन्हें अखाड़े, कुश्ती में महारत हासिल नहीं है बल्कि उन्हें आलू उत्पादन में कृषि रत्न का सम्मान मिला है। वह पाँच छः एकड़ के जोरदार सामंती किसान है। गाँव में उनका सम्मान है। ''पर इधर कुछ दिनों से पहलवान को एक एक कर इतने 'झोड़े' लगे कि उनकी एक ढर्रे पर चलने वाली आत्मतुष्ट दिनचर्या में खलल साफ दिखने लगी है कितने दिन हो गये सगरे में नहाय। अब अपने दरबाजे के कुएँ से ही दो चार लोटे पानी दायें–बायें डालकर नहान करने लगे हैं।''

'फॉस' (2015) संजीव का उपन्यास पिछले दो दशकों से बढ़ रही किसानों की आत्महत्या को लेकर लिखा गया है। उपन्यास में महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के गाँव बनगाँव का चित्रण किया गया है। लेकिन आंध्र प्रदेश व कर्नाटक के किसानों सहित भारत के उन सभी किसानों की कहानियाँ शामिल हैं, जिन्हें पहले जी. एम. बीजो का इस्तेमाल करने के लिए फुसलाया गया और फिर कर्ज दिया गया।

'अकाल में उत्सव' (2016) पंकज सुबीर के 'उपन्यास की कथावस्तु दो भागों में विभाजित है। एक तरफ मुख्यमंत्री के आदेशानुसार भव्य उत्सव के आयोजन की चर्चा हो रही है। तो दूसरी तरफ वर्षा तूफान और ओले पड़ने से किसानों की फसल नष्ट होने का सदमा वह सहन न करने के कारण आत्महत्या करने पर विवश है।' अकाल में उत्सव प्रयुक्त शब्द युग्म अपने परस्पर विपरीतधार्मिकता के कारण न सिर्फ हमारा ध्यान खींचता है बल्कि एक खास तरह के विडंबनाबोध की सृष्टि भी कराता है।

संदर्भ सूची
1. शर्मा, राजू, हलफनामे, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2006
2. शिवमूर्ति, आखिरी छलांग, राजकमल प्रकाशन, 2008
3. संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, 2015
4. सुबीर, पंकज, अकाल में उतव, शिवन प्रकाशन, 2016
5. कुमार अशोक, पाण्डे के आलेख भूमण्डलीय गाँव में भारतीय किसान, 2007
6. आकार, हलफनामे पर अरूणेश नीरज की समीक्षा, 2008
7. प्रेमपाल, एक सच्चा बहुजन उपन्यास, 2015
8. मिश्र, विवेक, फॉस उपन्यास एक सामूहिक नोट है, वाणी प्रकाशन, 2016
9. तिवारी, वालेन्दु शेखर, भ्रष्ट व्यवस्था की उत्सव – धार्मिकता का आख्यान, 2016

10. सिंह, राज, फॉस : उपेक्षित भारतीय किसान की मूक चीख, 2016
11. त्रिपाठी, हरिओम, किसान आन्दोलन और प्रेमचंद का साहित्य, 2016
12. ढींगरा, डॉ. सुधा ओम, विमर्श – अकाल में उत्सव (स्थगित समय में फँसे जीवन का आख्यान), शिवना प्रकाशन, 2017